6–8–67 ओमशांति रात्रीक्लास

जो ब्राह्मणी आती है बच्चों के साथ तो उनको बार2 कहना चाहिए कि आत्मअभिमानी बनकर बैठो यह सावधानी बार2 देनी चाहिए। तीर्थों पर जाते हैं तो कहते हैं कि सावधान खबरदार। तो यहां पर भी ब्राह्मणी को खुद भी खबरदार होकर रहना है और औरों को भी करना है। तुम बच्चे जानते हो कि हम आते हैं दुःखधाम से सुखधाम में जाने के लिए। यहां इस याद में ही रहने से कमाई होती जावेगी। जितना याद करेंगे उतना ही फायदा है। और कहीं पर भी कमाई हो नहीं सकती है। यहां पर बैठे हैं तो भी कमाई है। श्रीमत पर चलकर याद करना है। इसमें गफलत नहीं करनी चाहिए। श्रीमत पर चलना चाहिए। इस समय कमाई बहुत है। इसमें गफलत नहीं करनी चाहिए। बाप है उंच ते उंच। भगवान कहने पर नशा नहीं चढ़ता है। सर्वव्यापी कहने पर भी वो बाप का नशा नहीं चढ़ता है। अभी तुम बच्चों को तो समझाया जाता है कि भगवान ही बाप है। शिवबाबा से ही वर्सा मिलता है। बाप आते हैं तो तुम सभी आत्माएं भी उतरती हो। इनको अवतार कहा जाता है। सभी बच्चे अवतरते हैं पार्ट बजाने। अवतार भी आजकल तो बहुत हो गये हैं ना। यहां पर तो कहा जाता ...कि शिवबाबा आते हैं। जयंति है जरूर ;परंतु बाबा क्या आकर करते हैं वो तो कुछ भी नहीं जानते हैं। बाबा अब बताते हैं कि बच्चे समझते हैं कि बाबा अब भारत को वर्सा आकर दो। शिवबाबा का जन्म तो भारत में ही हुआ था ना। ज्ञान सागर बाप है तो जरूर ज्ञान सुनाया ही होगा। पतित–पावन है। ज्ञान ही सुनाते हैं। मनमनाभव। बाकी तो भक्तिमार्ग में तो अनेक मत हैं। महावीर (ब्रह्मा)भी इनको ही कहेंगे। महावीर का मंदिर भी है ना। दिखाते हैं कि हनुमान तो इतना पहलवान था जो कि कितने भी तूफान आते हों हिलता नहीं था। तुम बच्चे भी महावीर हो। तुम देवी देवताएं बनते हो। तो भी पूजा होती है। आत्माओं की भी पूजा होती है। शिव के भी तो सालिग्रामों की भी पूजा होती है। कृष्ण की आत्मा ने भी पढ़ा है। बहुत जन्मों के अंत में वो ....आत्मा के शरीर में प्रवेश करते हैं। फिर उनका नाम ब्रह्मा रख देते हैं। तुम बच्चों को भी महावीर बनकर जीत पानी है। पहली2 ही बात कि कहीं पर हम पतित तो नहीं बनते हैं। प्रतिज्ञा करके अगर पतित बनते हैं तो फिर बहुत भारी दंड पड़ेगा। रजिस्टर ही खराब हो जाता है। बहुत धक्का आ जाता है। विकार में गिरा तो समझो कि दिवाला मारा गया हो। इसलिए ही बहुत खबरदारी रखनी है। बाप कहते हैं अपने अंदर में देखो बाप को सुनावे वा नहीं सुनावे ;परंतु गिरते हैं तो आप ही अपना दिवाला मारते हैं। यहां पर तो तब बिठाया (जाये) जबकि पक्की प्रतिज्ञा करें। फिर भी अगर विकार में (गया) तो खतम। बाप यहां बैठे हैं। इन्द्र भी उनको ही कहा जाता है। इन्द्र की सभा यही है। ओम।

<u>7–8–67–</u> अनुभव सुनाते हैं कि कैसे हम ईश्वरीय औलाद बने हैं। पहले तो हम आसुरी औलाद थे। यह है ईश्वरीय परिवार है। वो है आसुरी परिवार। तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुगवासी। वो है कलियुगवासी। बहुत फर्क है ना। तुम बच्चों की बुद्धि में है हम पुरुषोत्तम बन रहे हैं। उत्तम ते उत्तम पुरुष कौन?ल.ना.। उंच ते उंच भगवान बैठ उंच ते उंच पुरुषोत्तम देवता बनाते हैं। मानुष से देवता बने कैसे बने?मनुष्य जो मूतपलीती है उनके कपड़े धोने पर ही देवता बने। उसको ही कहा जाता है कायाकल्पतरू। तुम्हारी काया कल्पवृक्ष सामन महबूत बनती है। तुम अपने को कितना सौभाग्यशाली समझते हो। यह है उंच पढ़ाई। आसुरी पढ़ाई से आसुरी ही दुनियां में पाई–पैसे का पद मिलता है। ईश्वरीय पढ़ाई से तो विश्व का मालिक बनेंगे। तो कौन सी पढ़ाई पढ़नी चाहिए। वो पुरानी दुनियां विनश्यन्ति होती है। तुम बच्चे ही विश्व पर विजय पाते हो। यह है नालेज। भगवानोवाच्य कहते हैं ना। भगवान तो एक ही होता है। जिनको ही बाबा कहा जाता है। शिवबाबा तो निराकार है। अब उनसे वर्सा कैसे मिले?जरूर रथ चाहिए। यह है भाग्यशाली रथ। यह वो ही है जो सतयुग में श्रीकृष्ण था। फिर नारायण बना। फिर सीढ़ी उतरते2 यह अंतिम जन्म है। अब तुम ब्राह्मण तो विष्णुपुरी में जाते हो। हर बात सीधी2 समझाई जाती है। बाकी पवित्र जरूर बनना है और बाप को याद करना है। ओम।